हल्द्वानी में प्रयागराज की डॉ पूर्णिमा पाण्डेय 'पूर्णा' अंतरराष्ट्रीय नारी रत्न सम्मान 2026 से सम्मानित

प्रयागराज (उ.प्र.): विश्व हिंदी रचनाकार मंच द्वारा 12 अप्रैल 2026 को हल्द्वानी (उत्तराखंड) के अरुणोदय सभागार में नारी रत्न सम्मान एवं महिला काव्य रत्न पुस्तक के लोकार्पण समारोह में प्रयागराज की वरिष्ठ कवयित्री डॉ पूर्णिमा पाण्डेय को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। इस भव्य साहित्यिक समारोह में उन्हें अंतरराष्ट्रीय नारी रत्न सम्मान-2026 से सम्मानित किया गया । काव्य पाठ की श्रृंखला में डॉ पूर्णिमा पाण्डेय ने कविता पाठ कर वाहवाही बटोरी। डा. पूर्णा की इस उपलब्धि पर परिजनों, रिश्तेदारों, शुभचिंतकों सहित अनेक साहित्य प्रेमियों ने बधाइ व्यक्त करते हुए बधाइयां शुभकामनाएं देकर उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा का लालू नगर में हुआ अनावरण

पटना संवाददाता विनोद प्रसाद, डॉ. भीमराव अम्बेडकर विकास मंच, लालू नगर, रूकनपुरा में आज बाबासाहेब डॉ.भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा का अनावरण किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि केन्द्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने शिक्षा के प्रसार पर बल देते हुए कहा कि दलित समाज में शिक्षा की कमी ही अभिशाप है। उन्होंने कहा कि बाबासाहेब अम्बेडकर शिक्षा को शेरनी का दूध बताते थे और कहते थे कि जो पियेगा वही दहाड़ेगा। मंत्री ने शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने के लिए समान शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता पर जोर दिया।

विशिष्ट अतिथि बिहार के कृषि मंत्री रामकृपाल यादव ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर का मूलमंत्र था- शिक्षित बनो, एकता के सूत्र में बंधो और संघर्ष के लिए सदैव तत्पर रहो। हम सभी को उनके आदर्शों का अनुसरण करना चाहिए। कार्यक्रम में दीघा के विधायक डॉ. संजीव चौरसिया, बिहार बाल अधिकार संरक्षण आयोग की सदस्य शीला प्रजापति सहित कई गणमान्य की गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता सतीश पासवान ने की।

वरिष्ठ समाजसेवी सुरेंद्र प्रजापति ने कहा बाबा साहब के विचार और उनके द्वारा निर्मित संविधान आज भी भारत की एकता और अखंडता का आधार है। मंच के सदस्यों के अलावा विवेक, गुड़िया, सूरज पासवान, नीरज,सुधीर, छोटू ओझा, नरेश पासवान, श्रवण पासवान, कृष्णा चौधरी, लक्ष्मण राम, गंगासागर, सत्यदेव सुमन, राधे मोहन सहित भारी संख्या में उपस्थित लोगों ने बाबासाहेब को श्रद्धांजलि अर्पित की।

मजबूरी

रवि एक रंगीले मिजाज का व्यक्ति था जिसके लिए पैसे और शौक ही जीवन का सबसे बड़ा सत्य बन चुके थे! वह अक्सर बड़े-बड़े होटलों में जाता और अपनी इच्छाओं को पैसे के दम पर पूरा करता उसे लगता था कि दुनिया में हर चीज खरीदी जा सकती है! एक दिन उसे एक होटल से फोन आया और वह बिना ज्यादा सोचे वहां पहुंच गया लेकिन उस दिन उसकी जिंदगी बदलने वाली थी जैसे ही वह कमरे में दाखिल हुआ उसने देखा कि वहां एक करीब अठारह वर्ष की मासूम सी लड़की बैठी थी उसके चेहरे पर डर और संकोच साफ झलक रहा था! उसकी आंखों में एक अजीब सी बेचैनी थी!

रवि ने उसे देखा और उसके भीतर पहली बार कोई अजीब सा द्वंद्व जागा उसका मन उस लड़की के पास जाने का नहीं हुआ! उसने धीरे से पूछा तुम यहां क्यों आई हो लड़की पहले तो चुप रही फिर उसकी आंखों से आंसू बहने लगे उसने कांपती आवाज में कहा मैं एक गरीब परिवार से हूं पढ़ना चाहती हूं कॉलेज की फीस भरने के लिए मेरे पास कोई रास्ता नहीं बचा! लोग कहते हैं यह रास्ता गलत है लेकिन भूख और मजबूरी सही गलत नहीं देखती मैं कभी-कभी यहां आ जाती हूं ताकि अपनी पढ़ाई जारी रख सकूं उसके शब्दों ने रवि के भीतर जैसे तूफान खड़ा कर दिया उसे पहली बार एहसास हुआ कि जिस दुनिया को वह सिर्फ एक खेल समझता था उसके पीछे कितनी मजबूरियां और टूटे हुए सपने छिपे होते हैं! रवि की आंखों के सामने जैसे उसके अपने जीवन का आईना आ गया वह सोचने लगा कि उसने अपनी जिंदगी में कितना कुछ व्यर्थ गंवा दिया और कितनों की मजबूरी को अपने शौक का हिस्सा बना लिया!

उस क्षण उसके भीतर का इंसान जाग उठा उसने उस लड़की से कहा तुम्हें यह सब करने की जरूरत नहीं है अगर तुम्हारा उद्देश्य पढ़ाई है तो मैं तुम्हारी मदद करूंगा लेकिन एक शर्त पर कि तुम इस रास्ते पर दोबारा कभी नहीं आओगी! लड़की ने हैरानी से उसकी ओर देखा जैसे उसे यकीन ही नहीं हो रहा था कि कोई बिना स्वार्थ के भी मदद कर सकता है! उसने रोते हुए हामी भर दी उस दिन रवि ने न केवल उस लड़की की फीस भरने का जिम्मा लिया बल्कि अपने जीवन को भी बदलने का संकल्प लिया! उसने पहली बार महसूस किया कि सच्चा सुख भोग में नहीं बल्कि किसी की जिंदगी संवारने में है उस दिन उसके लिए वह होटल का कमरा एक मंदिर बन गया जहां उसने अपने पापों से मुक्ति की प्रार्थना की और एक नई राह पर चलने का निर्णय लिया! उस मासूम लड़की की आंखों में जो चमक था वही रवि के जीवन की सबसे बड़ी कमाई बन गयी! आज रवि ने एक बेसहारा की मदद करने का वादा जो किया है!!

डॉ. राजेंद्र यादव 'आजाद'
94 1427 1288

एक सूर्य का अस्त होना

▸ सुभाष चंद्र लखेड़ा, नई दिल्ली, subhash.surendra@gmail.com

डॉ. शिवगोपाल मिश्र: विज्ञान संचार के अग्रदूत

यह एक अजीब संयोग था कि 23 मार्च को मैं पत्नी को सुबह की सैर के दौरान डॉ. मिश्र से जुड़ी एक घटना की चर्चा करते हुए बता रहा था कि कैसे डॉ. शिवगोपाल जी सुबह सुबह प्रयागराज स्टेशन पर हम लोगों को लेने स्वयं पहुंचा करते थे और कैसे वह विज्ञान परिषद् में बाहर से पहुंचने वाले विज्ञान लेखकों का ख्याल रखते थे। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2015 में परिषद् कार्यालय में विज्ञान के मेरे सम्मान में प्रकाशित अंक के विमोचन के अवसर पर मेरी पत्नी सुरेंद्रा को भी उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

हम यानी पत्नी और मैं मार्च के चौथे सप्ताह के उस दिन अमेरिकी राज्य कैलिफोर्निया के सान होजे शहर में थे जब हमें फेसबुक के माध्यम से यह दु:खद खबर मिली कि हिंदी विज्ञान लेखन और कृषि विज्ञान के अग्रदूत डॉ. शिवगोपाल मिश्र 24 मार्च 2026 के दिन अपनी अनंत यात्रा पर चले गए हैं।

खैर, यह विधि का विधान है कि जो इस धरती पर आता है, उसे देर सबेर यहां से जाना पड़ता है और हमारे पास उसे स्वीकार करने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं होता। फर्क इतना है कि कुछ लोग अपने समाज या देश या विश्व कल्याण के लिए इतना कुछ कर जाते हैं कि वे संबंधित लोगों की यादों का अविस्मरणीय हिस्सा बन जाते हैं। डॉ. शिवगोपाल मिश्र ऐसे ही चुनिंदा लोगों में से एक थे जो जब तक जिए, विज्ञान और विज्ञान संचार के लिए अपना योगदान निरंतर देते रहे। विज्ञान के जनभाषा - आधारित लोकप्रसार, विशेषत: हिन्दी में वैज्ञानिक चिंतन के विकास के लिए उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरगामी रहा है।

मैं इस संदर्भ में सर्वप्रथम विज्ञान परिषद् प्रयाग की चर्चा कर रहा हूं। यह वर्ष 1913 में स्थापित वह ऐतिहासिक संस्था है, जिसने 1915 से ' विज्ञान ' नामक हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन करते हुए देश में वैज्ञानिक दृष्टि के विकास में अग्रणी भूमिका निभाई है। इस परिषद् के प्रधानमंत्री के रूप में डॉ. मिश्र ने संस्था की शताब्दी-परंपरा को नई ऊर्जा दी और बदलते समय, तकनीक और पाठक-वर्ग की अपेक्षाओं के अनुरूप परिषद् की गतिविधियों का मार्गदर्शन किया।

' विज्ञान ' के संपादक के रूप में उनका कार्य केवल सामग्री-संपादन तक सीमित नहीं था; उन्होंने पत्रिका की वैचारिक दिशा, भाषा-शैली और विषय-वस्तु—इन तीनों स्तरों पर उच्च मानदंड स्थापित किए। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि वैज्ञानिक लेखन न केवल तथ्यगत रूप से प्रमाणित और शोधाधारित हो, बल्कि भाषा की दृष्टि से भी सहज, प्रवाहपूर्ण और सामान्य पाठकों के लिए बोधगम्य रहे। इसी के साथ, उन्होंने नवोदित लेखकों और शोधार्थियों को अवसर देकर हिन्दी विज्ञान-लेखन की नई पीढ़ी तैयार करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डॉ. मिश्र का व्यक्तित्व ' विज्ञान प्रशासक ' और ' पत्रिका संपादक ' की औपचारिक सीमाओं से कहीं अधिक विस्तृत था। वे विज्ञान के लोकहितकारी स्वरूप के प्रबल पक्षधर थे और बार - बार इस बात पर बल देते रहे कि वैज्ञानिक ज्ञान तभी सार्थक है, जब वह समाज की समस्याओं के समाधान, तार्किक सोच के विकास और अंधविश्वासों के निराकरण में सक्रिय भूमिका निभाए। परिषद् और पत्रिका के सीमित संसाधनों के बीच भी उन्होंने कार्यक्रमों, प्रकाशनों और संवाद-गतिविधियों को निरंतर बनाए रखा, जो उनके त्याग, प्रतिबद्धता और संस्थान-निष्ठा के द्योतक हैं।

उनके नेतृत्व में 'विज्ञान' पत्रिका ने विभिन्न समसामयिक वैज्ञानिक विषयों पर विशेषांकों, लोकप्रिय विज्ञान लेखों और शोधपरक लेखों के माध्यम से एक ओर शोध-जगत से संवाद बनाए रखा, तो दूसरी ओर विद्यार्थियों, शिक्षकों और विज्ञान-रुचि रखने वाले सामान्य पाठकों के लिए भी प्रेरक सामग्री उपलब्ध कराई। हिन्दी में विज्ञान संचार को स्वतंत्र पहचान दिलाने में विज्ञान परिषद् प्रयाग की जो ऐतिहासिक भूमिका रही है, डॉ. मिश्र ने उसे समकालीन संदर्भों में पुनर्संधापित और सुदृढ़ करने का सतत प्रयास किया।

डॉ. शिवगोपाल मिश्र का जाना विज्ञान परिषद् प्रयाग, ' विज्ञान ' पत्रिका और समूचे हिन्दी विज्ञान जगत के लिए ऐसी रिक्तता छोड़ गया है, जिसे भर पाना सहज नहीं होगा। तथापि, विज्ञान को भारतीय भाषाओं के माध्यम से अधिक मानवीय, अधिक लोकसुलभ और अधिक उत्तरदायी बनाने का जो स्वप्न उन्होंने अपने कर्म, चिंतन और मार्गदर्शन से हमारे सम्मुख रखा, वह आगे भी परिषद् की गतिविधियों और 'विज्ञान' के प्रत्येक अंक में जीवित रहेगा।

मैं डॉ. शिवगोपाल मिश्रा जी के सीधे संपर्क में लगभग चार दशक तक रहा। मुझे अपनी पत्नी के साथ वर्ष 2015 में परिषद् के उस अतिथि गृह में ठहरने का अवसर भी मिला जिसका निर्माण उन्होंने अपने संसाधनों से किया था। उनकी और मेरी आयु में यद्यपि लगभग बीस वर्ष का फर्क था लेकिन वे किसी से भी बातचीत करते समय उसे अपनी आयु और योग्यता की वरिष्ठता और श्रेष्ठता का एहसास नहीं होने देते थे।

मैं जब भी विज्ञान संचार से जुड़े किसी कार्यक्रम हेतु प्रयागराज गया, उनका निश्छल स्नेह निर्बाध रूप से मुझे मिलता रहा। मुझे याद है कि वे शाम को सभी प्रतिभागियों द्वारा शाम का भोजन कर लेने के बाद ही साइकिल पर अपने निवास के रवाना होते थे।

आज से लगभग चार दशक पहले मुझे ' भारतीय भाषाओं में विज्ञान लेखन ' पर आयोजित संगोष्ठी में भाग लेने के दौरान प्रयाग राज पहुंचने के दौरान निमोनिया हो गया था। डॉ. मिश्रा ने न सिर्फ मुझे एक चिकित्सक को दिखवाया अपितु अपने एक युवा विद्यार्थी श्री पवन सिरोठिया (डॉ. पवन सिरोठिया) को मेरी देखभाल की जिम्मेदारी सौंपी।

देश भर में जहां भी परिषद् के सहयोग से विज्ञान संचार से जुड़े कोई कार्यक्रम होते थे, डॉ. मिश्र मुझे वर्षों तक ऐसे कार्यक्रमों में शामिल करते रहे। उनकी बदौलत मुझे देश में अनेक कार्यक्रमों में अपना योगदान देने का मौका मिला। उनकी सबसे बड़ी खूबी थी कि वे अपने आलोचकों को तक उतना ही स्नेह देते थे जितना अपने प्रशंसकों को।

देश के प्रमुख मृदाविद्यालयों में गिने जाने वाले डॉ. मिश्र ने 200 से अधिक शोध पत्र राष्ट्रीय - अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित किए। अम्लीय - क्षारीय मृदाओं पर उनका शोध क्रांतिकारी था तथा उनके मार्गदर्शन में 42 शिष्यों ने डी.फिल. तथा 3 ने डी.एससी. प्राप्त की। हरित क्रांति के दौर में मृदा स्वास्थ्य, उर्वरता एवं प्रदूषण पर उनके कार्य ने भारतीय कृषि को मजबूत आधार दिया। पुस्तकें जैसे 'मृदा प्रदूषण' (1994), 'जल प्रदूषण' (1994), 'फॉसेफेट' (1974) छात्रों-किसानों के लिए मानक ग्रंथ बनीं।

डॉ. मिश्र का जाना विज्ञान परिषद प्रयाग, ' विज्ञान ' पत्रिका और समूचे हिंदी विज्ञान जगत के लिए अपूरणीय रिक्तता छोड़ गया है। मुझे पूरा विश्वास है कि उनका स्वप्न हिंदी में वैज्ञानिक लेखन, वैज्ञानिक चेतना और तर्कसम्मत दृष्टि के उन्नयन का मार्गदर्शक बनेगा।

सामयिक

दरकार : नई आचार संहिता की...

आज जो माहौल है वो एक नई और बड़ी आपदा का संकेत है। मौजूदा दौर में देश की सरकार को शांतिकाल से अलग युद्ध व आपदा काल के हिसाब से आचार संहिता बनानी चाहिए। वो भी समय रहते, ताकि बाद में हाथ खड़े करने की नौबत न आए। एक ऐसी आचार संहिता, जिसका पालन पहले नेता और नौकरशाह करें और फिर आम जन से कराएं। जिसके नियम तत्काल प्रभाव से लागू व रद्द होने वाले हों और उनका उल्लंघन गम्भीर व तत्काल दंडनीय अपराध माना जाए। आम से खास जन और संतरी से मंत्री तक सबके लिए एक समान। फिर चाहे मौसम चुनावी हो या त्यौहारी।

इस आचार संहिता के तहत हर तरह की वो आज़ादी एक नियत अवधि के लिए प्रतिबंधित हो, जो लोकहित व राष्ट्रहित के विरुद्ध प्रतीत व साबित हो। केवल सत्ता या सत्ताधीशों के लोकतांत्रिक विरोधियों के लिए ही नहीं। सियासी दमन नहीं, इस चमन में अमन के लिए। तानाशाही नहीं, केवल वांछित लोकशाही के लिए। जिसका अस्तित्व तक फिलहाल संकट में है। एक ऐसी आचार संहिता, जिसके दायरे में देश का प्रत्येक नागरिक समान रूप से आए। फिर चाहे वो सरकारी हो या असरकारी। यहां तक कि बड़े से बड़ा राजनेता भी और आला अफसर भी।

ध्यान रखा जाना चाहिए कि कोरोना महामारी जैसी आपदा वैश्विक संकट की शुरुआत भर थी, अंत नहीं। इसके स्तर या रूप में बदलाव अवश्यम्भावी हैं। खास कर अमेरिकन राष्ट्रपति की खुली दबंगई को देखते हुए। जिसकी मार पूरी दुनिया के साथ हमारे देश पर भी पड़ रही है। विश्व बर्चस्व को बेताब विस्तारवादी चीन और उत्तर कोरिया जैसे नीच देश का वजूद कभी भी नया खतरा उत्पन्न कर सकता है। जिसके साथ युद्धोन्माद से ग्रसित रूस, ईरान जैसे विध्वंसक देश खड़े हैं। इजरायल की सनक अपनी जगह बड़े संकट के हालात बना रही है। दुनिया को अपने हथियारों का बाज़ार भर मानने वाले अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इज़रायल, रूस, चीन जैसे देश विश्वयुद्ध की आंच को फूंक देने में जुटे ही हैं। ईरान, तुर्की, सीरिया, अफगानिस्तान, सऊदी अरब, पाकिस्तान, यूएई, लेबनान जैसे मुल्क हाथ सेंकने को तैयार बैठे हैं।

ऐसे में भारत जैसे विशाल देश को आंतरिक असुरक्षा से निपटने के लिए अग्रिम रूप से सक्षम रहना ही चाहिए। ताकि देश और मानव प्रजाति के खिलाफ़ भावी षड्यंत्रों को यथासमय निर्मूल किया जा सके। आज जो हालात हैं, वो परमाणु युद्ध से पहले जैविक और रासायनिक हमलों की आशंका उपजा रहे हैं। जिनके त्वरित विस्तार में आज़ादी के नाम पर जारी निरंकुशता मददगार बन सकती है। आशा की जानी चाहिए कि वैश्विक घातों के मामले में भुक्तभोगी देश इस दिशा में विचार कर जल्द ही प्रभावी निर्णय लेगा। आज के सामयिक विचार का समापन इन चार निजी व मौलिक पंक्तियों के साथ करता हूं कि-

'दोस्ती की कोशिशें जारी रखो,
दुश्मनों पे भी नज़र भारी रखो।
ठीक है हमला नहीं भाता तुम्हें,
बच सकें इतनी तो तैयारी रखो।।'

नहीं भूलना चाहिए कि आज दौर सिर्फ और सिर्फ व्यावसायिक है, जिसमें किसी को भी दोस्त मानने की भूल या लाचारगी 135 करोड़ लोगों पर ही भारी पड़ेगी। बाक़ी 5 करोड़ तो कुबेर और कालजयी बन ही चुके हैं। जो

अंबुजा सीमेंट्स ने खरगोन के ठेकेदार को सशक्त बनाकर स्थायी निर्माण की दिशा में दिया नया आयाम

खरगोन: विविधीकृत अदाणी पोर्टफोलियो की सीमेंट और निर्माण सामग्री कंपनी अंबुजा सीमेंट्स, मध्य प्रदेश के ठेकेदारों को उच्च गुणवत्ता वाले उपाद, तकनीकी विशेषज्ञता और भरोसेमंद ऑन-ग्राउंड सहयोग के माध्यम से सशक्त बना रही है। खरगोन में एक साधारण पृष्ठभूमि से उठकर निर्माण क्षेत्र में एक सम्मानित नाम बने मुबारिक खान की यात्रा इस साझेदारी के दीर्घकालिक प्रभाव को दर्शाती है।

जब मुबारिक खान ने अपने करियर की शुरुआत की, तब उन्हें सीमित संसाधनों और अनुभव की कमी जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उन्हीं शुरुआती दिनों में उन्होंने अंबुजा सीमेंट्स के साथ काम करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया। यह साझेदारी उनके करियर के लिए एक बड़ा मोड़ साबित हुई। अंबुजा सीमेंट्स ने उन्हें केवल उच्च गुणवत्ता वाला सीमेंट ही नहीं दिया, बल्कि तकनीकी मार्गदर्शन, समय पर आपूर्ति और साइट स्तर पर विश्वसनीय सहयोग भी प्रदान किया। अंबुजा सीमेंट्स के समर्थन से उन्होंने कई छोटे और बड़े प्रोजेक्ट समय पर सफलतापूर्वक पूरे किए, जिससे उनकी मजबूत पहचान बनी और उनके काम का दायरा लगातार बढ़ता गया।

मुबारिक खान अपने करियर में आए इस परिवर्तन का श्रेय अंबुजा सीमेंट्स को देते हैं। उनके अनुसार, चार प्रमुख विशेषताओं ने उनकी सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई–उच्च गुणवत्ता वाला सीमेंट जो संरचना की मजबूती सुनिश्चित करता है, समय पर डिलीवरी जिससे प्रोजेक्ट सुचारू रूप से चलते हैं, विशेषज्ञों द्वारा तकनीकी मार्गदर्शन और प्रशिक्षण, तथा डीलर्स और ग्राहकों के साथ मजबूत संबंध। आज मुबारिक खान क्षेत्र में दर्जनों मजबूत और टिकाऊ संरचनाओं के निर्माण में अपने योगदान के लिए पहचाने जाते हैं। वे गर्व से कहते हैं कि अगर आज उनकी पहचान बनी है, तो उसमें अंबुजा सीमेंट्स की बड़ी भूमिका है। उनके लिए यह केवल सीमेंट नहीं, बल्कि भरोसे की मजबूत नींव है।

वरिष्ठ नागरिक काव्य मंच का वार्षिकोत्सव समारोह संपन्न

देश विदेश के साहित्यकारों ने बांधा समा

नई दिल्ली, 13 अप्रैल हिन्दी साहित्य को समर्पित संस्था 'वरिष्ठ नागरिक काव्य मंच' का वार्षिकोत्सव समारोह का भव्य आयोजन रेडरोज पब्लिक स्कूल, पालम विहार, गुरुग्राम में किया गया।समारोह में देश-विदेश से पधारे साहित्यकारों ने एक से बढ़कर एक रचनाओं की शानदार प्रस्तुति से समारोह को नई ऊंचाइयाँ प्रदान कीं।

मंच के संस्थापक डॉ. नरेश 'नाज' व मकाम ट्रस्ट की अध्यक्ष नियति गुप्ता के सानिध्य में हुवे समारोह की मुख्य अतिथि मकाम की वैश्विक अध्यक्ष डॉ नीतू सिंह राय रही, अध्यक्षता मंच के वैश्विक अध्यक्ष राजेन्द्र निगम राज ने की। मॉस्को से पधारीं मकाम, रूस की अध्यक्ष श्वेता सिंह उमा तथा राष्ट्रीय कवि संगम के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक बत्रा ने विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल हुए।

समारोह का आयोजन वनकाम की राष्ट्रीय संरक्षक वीणा अग्रवाल और राष्ट्रीय उपाध्यक्ष इन्दु 'राज' निगम द्वारा किया गया। वनकाम की हरियाणा प्रदेश की चारों इकाइयों के अध्यक्षों विनय कुमार,शुभ तनेजा, हेमा झा (अध्यक्ष, छत्तीसगढ़), उमंग सरीन ,प्रिया वरुण कुमार, दिल्ली, शकुंतला मित्तल (उपाध्यक्ष, हरियाणा), आभा कुलश्रेष्ठ (महासचिव, हरियाणा), लोकेश चौधरी (अध्यक्ष, प्रहरी मंच), डॉ प्रवीण शर्मा, कुलदीप कौर,किशोर सिन्हा (बिहार), रश्मि रानी कौशल,सीमा माहेश्वरी , आशा सिन्हा कपूर (मध्य प्रदेश), अंजू क्वात्रा,अपराजिता शर्मा, (छत्तीसगढ़), मुकेश दत्त ,नवीन राणा,(शिलांग), आनंद गौतम ,दीपा शर्मा उजाला, सुजीत कुमार,अशोक सरीन ,बी पी बंसल, वरुण कुमार, जैसे प्रतिष्ठित साहित्यकारों की गरिमामयी उपस्थिति रही।बाल कवि के रूप में दिल्ली से 6 वर्षीय हर्षित कर्ण ने भी अपनी प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया। समारोह का संचालन राजेन्द्र निगम 'राज' तथा इन्दु 'राज' निगम ने किया। समारोह का शुभारंभ वरिष्ठ साहित्यकार वीणा अग्रवाल की मधुर मीं सरस्वती की वंदना से हुआ। तत्पश्चात्अतिथियों तथा उपस्थित साहित्यकारो को अंगवस्त्र, प्रतीक चिह्न एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर के सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मंच की राष्ट्रीय संरक्षक ने वर्ष 2025 में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विजय मोहन सिंह को 'संस्थापक अवार्ड' तथा मंच की चंडीगढ़-1 इकाई तथा पश्चिम बंगाल इकाई को 'सर्वश्रेष्ठ इकाई- 2025' अवॉर्ड प्रदान करने की घोषणाकी गई।समारोह के अन्त में कार्यक्रम अध्यक्ष राजेन्द्र निगम 'राज' ने देश विदेश के सभी साहित्यकारों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

डॉ.शंभु पंवार, (वर्ल्ड रिकॉर्ड धारक)
अंतर्राष्ट्रीय लेखक, पत्रकार-विचारक,